परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय, इन्दौर

शैक्षणिक सत्र 2020-21

कक्षा - आठ विषय - हिन्दी

वसंत भाग - ३

पाठ 14 - अकबरी लोटा

मौड्यूल- 1

प्रस्तुतकर्त्री
मंजू देवी, प्र. स्ना. अ. वरि.मान (हिन्दी / संस्कृत)

वसंत

भाग 3

कक्षा 8 के लिए
हिंदी की पाठ्यपुस्तक

अकबरी लोटा

लेखक परिचय

कक्षा 8
पाठ - 14

कहानी – अकबरी लोटा

लेखक : अन्नपूर्णानन्द वर्मा
जन्म : 21 सितंबर 1895
मृत्यु : 04 दिसंबर 1962
स्थान : काशी (उत्तर प्रदेश)

लेखक परिचय

अन्नपूर्णानंद जी का जन्म 2 सितंबर 1895 में तथा देहावसान 4 दिसंबर 1962 में हुआ था । ये हिंदी के हास्य लेखक थे। विख्यात मनीषी तथा राजनेता डॉ॰सम्पूर्णानन्द के आप छोटे भाई थे। इनकी पढ़ाई उत्तर प्रदेश के गाजीपुर के एक छोटे स्कूल से आरंभ हुई और मोतीलाल नेहरू के पत्र 'इंडिपेंडेंट' में कुछ समय श्रीप्रकाश के साथ इन्होंने काम किया।

पाठ प्रवेश

अन्नपूर्णानन्द की कहानी “अकबरी लोटा” एक हास्य पूर्ण कहानी है। लेखक ने कहानी को बहुत ही रोचंक तरीके से प्रस्तुत किया है और बताया है कि परेशानी के समय में परेशान न होकर समझदारी से किस तरह से एक समस्या का हल निकाला जा सकता है । दूसरी बात इस कहानी में यह भी बताई गई है कि एक सच्चा मित्र ही मित्र के काम आता है और वह उसके लिए बहुत कुछ कर गुजर जाता है। कहानी के माध्यम से लेखक हमें सीख देना चाहता है कि सही वक़्त पर सही समझ का उपयोग करना कितना जरुरी है। इस कहानी के मुख्य पात्र हैं - लाला झाऊलाल और उनके मित्र पंडित बिलवासी मिश्र जी।

शब्द - अर्थ

- मासिक - महीने
- प्रतिष्ठा - इज्जत
- गाथाएँ - कहानियाँ
- विपदा - मुसीबत
- हेंकड़ी - अकड़
- प्रकट - उपस्थित
- रोब - अकड़
- मॉडल - प्रतिरूप
- दुम - पूंछ
- खुक्ख - खाली हाथ
- उधेड़-बुन - फिक्र
- बेढ़ंगी - बेकार

शब्द - अर्थ

अदब - सम्मान

वेग - गति

ईजाद - खोज

प्रधान - मुख्य

कोष - खजाना

सुखद - सुख देने वाला

मुँडेर - किनारा

ओझल - गायब

हल्ला - शोर

पूर्व - पहले

तन्मयता - लगन

अकबरी लोटा

आसानी से समझिए

पाठ की व्याख्या

लाला झाऊलाल ----------मैं अपने भाई से माँग लूँ?’

लाला झाऊलाल को खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। अच्छे खाते पीते परिवार से थे और व्यवसाय भी अच्छा खासा चल रहा था। काशी के ठठेरी बाजार में मकान था। मकान के नीचे बनी दुकानों से महीने के करीब एक सौ रुपये किराया आ जाता था। तो गुजारा अच्छे से हो जाता था। परन्तु फिर भी एक साथ ढ़ाई सौ रूपए होना बहुत बड़ी बात थी।

इसलिए जब लाला झाऊलाल की पत्नी ने एक दिन अचानक ढाई सौ रुपये की माँग उनके सामने जाहिर की तब लाला झाऊलाल का दिल ही घबरा गया और उनका दिल भी बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर उनकी पत्नी ने कहा कि अगर लाला झाऊलाल अपनी पत्नी को पैसे नहीं दे सकते हैं, तो वह अपने भाई से माँग लेगी।

लाला झाऊलाल तिलमिला उठे--------- वह क्या सोचेगी?

जब लाला झाऊलाल की पत्नी ने अपने भाई से पैसे माँगने की बात कही तो लाला झाऊलाल क्रोधित हो उठे कि उनके होते हुए उनकी पत्नी अपने भाई से पैसे माँगेगी, यह बात उन्हें मंजूर नहीं थी। उन्होंने अकड़ के साथ कहा कि ढाई सौ रुपये के लिए भाई से भीख माँगोगी? वह ढाई सौ रुपये का इंतजाम कर देंगे । तब उनकी पत्नी ने कहा कि उसे ये रूपए इसी जिंदगी में चाहिए। इस पर लाला झाऊलाल ने कहा कि वह इसी सप्ताह में उसे रूपए दे देंगे । इस पर उनकी पत्नी ने उन्हें टोकते हुए कहा कि उनका सप्ताह कहने का अभिप्राय सात दिन से है या सात वर्ष से? तो लाला झाऊलाल गुस्से के साथ खड़े होते हुए बोले कि आज से गिन कर सातवें दिन मुझसे ढाई सौ रुपये ले लेना।

सात दिन बाद रूपए देने के लिए तो लाला झाऊलाल ने बोल दिया था लेकिन जब चार दिन का समय ऐसे ही बिना रुपयों के प्रबंध के बीत गया तो झाऊलाल को चिंता होने लगी कि उन्होंने अपनी पत्नी को पैसे देने का वादा तो कर दिया अगर नहीं दे पाए तो क्या होगा? अब प्रश्न उनकी अपनी प्रतिष्ठा का था, इज्जत का था। अपने ही घर में इज्जत दाव पर लगी थी। वे सोचने लगे कि देने का पक्का वादा करके अगर अब दे न सके तो उनकी पत्नी अपने मन में उनके बारे में न जाने क्या सोचेगी?

उसकी नज़रों में उसका ---------- तुमसे मकान पर मिलूँगा।

लाला झाऊलाल सोच रहे थे कि अगर उन्होंने अपनी पत्नी को पैसे नहीं दिए तो उसकी नज़रों में उनका क्या मूल्य रह जाएगा? उन्होंने अपनी पत्नी ने सामने अपनी तारीफों की सैकड़ों कहानियाँ सुना रखी थीं। अब उन्हें डर था कि कहीं उनकी कही हुई बातें झूठी साबित न हो जाएँ । उनकी पत्नी ने पहली बार अपनी इच्छा जाहिर की थी कि उसे कुछ रुपये चाहिए। इस समय अगर किसी तरह पत्नी को न कह कर बच निकलते तो वे उसके बाद अपनी पत्नी को क्या मुँह दिखाते?

एक दिन और बीता गया। लेकिन पैसों का इंतजाम नहीं हो पाया। पाँचवें दिन परेशान हो कर उन्होंने अपनी सारी कहानी अपने मित्र पं -बिलवासी मिश्र को सुनाई। उस समय उनके मित्र बिलवासी जी के पास भी उतना पैसा नहीं था जितने की वह माँग कर रहे थे। परन्तु लाला झाऊलाल के मित्र ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा कि मित्र होने के नाते उनकी मदद करने के लिए किसी से माँग कर लाने की कोशिश करेंगे और अगर पैसों का इंतज़ाम हो गया तो कल शाम तक वे लाला झाऊलाल को जरूर दे देंगे।

वही शाम आज थी---------- पत्नी पानी लेकर आईं।

आज वही शाम थी जिसका लाला झाऊलाल ने अपनी पत्नी से वादा किया था। हफ्ते का अंतिम दिन। लाला झाऊलाल सोच रहे थे कि कल ढाई सौ रुपये या तो पत्नी के हाथ में दे देने है या अपनी सारी अकड़ से हाथ धोना पड़ेगा। यह सच है कि कल अगर लाला झाऊलाल ने अपनी पत्नी को रुपए न दिए तो उनकी पत्नी उन्हें कोई फाँसी तो नहीं देगी परन्तु उनकी असफलता पर केवल जरा-सा हँस देगी। वह कैसी हँसी होगी उसकी कल्पना मात्र से झाऊलाल घबरा जाते थे क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नी से वादा किया था और वह अगर वह वादा पूरा नहीं कर पाए तो उनकी सारी हेकड़ी धरी की धरी रह जाएगी।

आज शाम को लाला झाऊलाल के मित्र पं. बिलवासी मिश्र को आना था। लाला झाऊलाल उसका इंतजार कर रहे थे और सोच भी रहे थे अगर वह नहीं आया तो फिर क्या होगा? तरह-तरह के सवाल उनके दिमाग में आ रहे थे। इसी फ़िक्र में पड़े लाला झाऊलाल छत पर टहल रहे थे। वह बहुत ही चिंता में थे। इसी घबराहट के कारण उन्हें प्यास लगी, उन्होंने नौकर को आवाज़ दी। नौकर नहीं था तो खुद उनकी पत्नी पानी लेकर ऊपर छत पर चली आईं।

वह पानी तो जरूर लाई---------- बाकी रह जाएगा?

उनकी पत्नी पानी तो लेकर आई लेकिन वह जल्दबाजी में गिलास लाना भूल गई, वह लोटा ही लेकर आ गई। लोटा भी वह लाई जो लाला झाऊलाल को उसकी बेढंगी सूरत के कारण बिलकुल भी पंसद नहीं था।

जिस लोटे में लाला झाऊलाल की पत्नी पानी लाई थी वह वैसे तो नया ही था, साल या दो साल पहले ही बना होगा। परन्तु उस लोटे की बनावट कुछ इस तरह थी कि देखने पर लगता था कि उसका बाप डमरू और माँ चिलम रही होगी। लाला ने लोटा ले लिया, अपनी पत्नी का वह बहुत ही सम्मान करते थे, इस कारण वह कुछ नहीं बोले जबकि उन्हें वह लोटा एक आँख भी नहीं भाता था। हर पति को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए। इसी को सभ्यता कहते हैं। यह बात भी बिलकुल सही है कि जो पति अपनी पत्नी का न हुआ तो वह किसी और का कैसे हो सकता है।

अब लाला ने सोचा कि अभी उनकी पत्नी लोटे में पानी ले कर आई है, वही सही है, अगर अभी लाला ने कुछ भी बोला और उनकी पत्नी बुरा मान गई तो हो सकता है कि उन्हें बाल्टी में भोजन मिले। तब लाला क्या करेंगे?

लाला अपना गुस्सा पीकर ---------- ओर चल पड़ा।

लाला ने अपने गुस्से को अन्दर ही अन्दर दबा लिया और वह पानी पीने लगे। उस समय वे छत के किनारे के पास ही खड़े थे। जिन बुजुर्गों ने पानी पीने के संबंध में यह नियम बनाए थे कि खड़े-खड़े पानी नहीं पीना चाहिए, सोते समय पानी नहीं पीना चाहिए, दौड़ने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए, उन्होंने पता नहीं कभी यह भी नियम बनाया या नहीं कि छत के किनारे के पास खड़े होकर पानी नहीं पीना चाहिए।

ऐसा मालूम होता है कि किसी बड़े बुजुर्ग ने कभी नहीं कहा कि छत के किनारे के पास खड़े होकर पानी नहीं पीना चाहिए। इस महत्वपूर्ण विषय पर किसी ने ध्यान नहीं दिया होगा। लाला झाऊलाल मुश्किल से दो-एक घूँट पी पाए होंगे कि न जाने कैसे उनका हाथ हिल गया और लोटा उनके हाथ से छूट गया। लोटा इस तरह गिरा कि वह इधर-उधर टकराने के बजाए सीधा गली की ओर चल पड़ा।

अपने वेग में उल्का को ---------- आँगन में घुस आई।

वह लोटा उस गति से नीचे गली की और गया जिस गति से आसमान में उल्का पिंड नजर आते हैं और उसी तेज गति से वह लोटा नजरों के सामने से गायब हो गया। किसी जमाने में न्यूटन नाम के खुराफाती वैज्ञानिक ने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति नाम की एक चीज की खोज की थी जिसे हम ग्रैविटी कहते हैं । ऐसा लग रहा था आज वह सारी शक्ति इस समय लोटे के पक्ष में थी। लाला के होश उड़ गए क्योंकि उनका घर तीसरी मंजिल पर था और इतनी ऊँचाई से लोटे का गिरना कोई हँसी मजाक नहीं था, अगर किसी के सिर पर गिरा तो उसका काम तमाम हो जाएगा ।

लाला अब घबराए हुए थे कि अगर लोटा किसी पर गिर गया तो क्या होगा? कुछ हुआ भी ऐसा ही। गली में जोर का शोर होने लगा। लाला को लगा कि आखिर में लोटा किसी न किसी के सिर पर जरूर जाकर गिरा होगा जो इतने जोर से आवाज आई। लाला झाऊलाल जब तक घबराकर नीचे आए तब तक एक भारी भीड़ उनके आँगन में घुस आई थी।

लाला झाऊलाल ने देखा ---------- ऐसा प्रकांड कोष है।

जब लाला झाऊलाल को चिल्लाने की आवाज आई तो वह नीचे दौड़े चले आए और उन्होंने देखा कि उनके आँगन में लोगों की भीड़ लगी हुई है और उस भीड़ का एक मुख्य पात्र एक अंग्रेज है जो सिर से पाँव तक भीगा हुआ है। और जो अपने एक पैर को हाथ से सहलाता हुआ दूसरे पैर पर नाच रहा है। उसके पैर पर शायद कुछ चोट लगी है इसलिए वह ऐसा कर रहा है उसी के पास अपराधी लोटे को देखकर लाला झाऊलाल सारी घटना को समझ गए कि आखिर में हुआ क्या है। गिरने के पूर्व लोटा एक दुकान के बाहरी हिस्से से टकराया था और उससे टकराकर वह अंग्रेज के पाँव पर जा गिरा जिससे अंग्रेज घायल हो गया।

लोटे ने दुकान पर खड़े उस अंग्रेज को पूरी तरह से सिर से लेकर पाँव तक धो दिया और फिर उसी के जूते पर आ गिरा। उस अंग्रेज़ को जब मालूम हुआ कि लाला झाऊलाल ही उसी लोटे के मालिक हैं तब उसने केवल एक काम किया वह चीखने -चिल्लाने लगा और मालिक को दोषी ठहराने लगा। लाला झाऊलाल को आज ही यह मालूम हुआ कि अंग्रेज़ी भाषा में भी गालियों का विशाल खज़ाना है।

इसी समय ---------- यह खतरनाक पागल है।

जिस समय अंग्रेज़ लाला को बुरा-भला कह रहा था, उसी समय पं .बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने देखा कि सब लोग उनके मित्र को दोषी ठहरा रहे हैं तो उन्होंने सबसे पहले समझदारी दिखाते हुए अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर का रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि आपके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है इसलिए आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए।

जब पं .बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिल्कुल मुकर गए और कहने लगे कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए। उनकी नज़र में यह इंसान एक खतरनाक पागल है। बिलवासी जी ने ऐसा अंग्रेज को शांत करने के लिए कहा था।

प्रश्न - उत्तर (कहानी की बात)

प्रश्न 1 - "लाला ने लोटा ले लिया, बोले कुछ नहीं, अपनी पत्नी का अदब मानते थे।" लाला झाऊलाल को बेढंगा लोटा बिलकुल पसंद नहीं था। फिर भी उन्होंने चुपचाप लोटा ले लिया। आपके विचार से वे चुप क्यों रहे? अपने विचार लिखिए।

उत्तर - एक सभ्य मनुष्य अपनी पत्नी का सम्मान करता है। लाला झाऊलाल सभ्य मनुष्य थे। कहानी में लाला झाऊलाल छह दिनों तक भी रूपयों का इंतज़ाम नहीं कर पाए थे इसलिए वह बहुत दुःखी और शर्मिन्दा थे इसीलिए उन्होंने लोटा चुपचाप ले लिया और पानी पीने लगे।

प्रश्न 2 - "लाला झाऊलाल जी ने फौरन दो और दो जोड़कर स्थिति को समझ लिया।" आपके विचार से लाला झाऊलाल ने कौन-कौन सी बातें समझ ली होंगी?

उत्तर - लाला झाऊलाल भीड़ को घर में घुसते देखकर ही समझ गए कि उनके हाथ से छूटा लोटा जरूर किसी पर गिरा है। जिसकी शिकायत लेकर ये भीड़ उनके घर में चली आ रही थी।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न2: "उस दिन रात्रि में बिलवासी जी को देर तक नींद नहीं आई।"समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी तो क्यों? लिखिए।

उत्तर - झाऊलाल के लिए बिलवासी जी ने अपनी पत्नी के संदूक से पैसे छिपाकर निकाले थे अब वे अपनी पत्नी के सोने की प्रतीक्षा में थे ताकि वह पैसे चुप-चाप संदूक में रख दें। इसलिए समस्या झाऊलाल की थी और नींद बिलवासी की उड़ी थी।

प्रश्न3: लेकिन मुझे इसी जिंदगी में चाहिए।"

"अजी इसी सप्ताह में ले लेना।"

"सप्ताह से आपका तात्यर्य सात दिन से है या सात वर्ष से?"

झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच की इस बातचीत से क्या पता चलता है लिखिए।

उत्तर - झाऊलाल और उनकी पत्नी के बीच की इस बातचीत से निम्न बातें उजागर होती हैं-झाऊलाल की पत्नी को अपने पति झाऊलाल के वादे पर भरोसा नहीं था। उनकी पत्नी को झाऊलाल की आमदनी का पता था। झाऊलाल कंजूस प्रवृत्ति के होंगे।

-इति-

धन्यवाद